सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:-8	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ:10 अगर न होतीं बेटियाँ, थम जाता संसार

बोलकर

(क) घर-परिवार बेटियों से आबाद हैं।

(ख) संसार बेटियों के न होने से थम जाता।

(ग) अकसर कुछ माताएँ बेटे और बेटियों में भेद-भाव करती हैं।

(घ) बेटियों के न होने पर समाज माता, पुत्री, बहन के प्यार से वंचित रह जाता।

लिखकर

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) समाज को उन्नत बनाने के लिए बेटियों को शिक्षित करना आवश्यक है। माता शिक्षित होगी तो संतान भी शिक्षित होगी।

(ख) बेटियों को बेटों की तरह सभी अधिकार समान रूप से मिलने चाहिए।

(ग) यदि बेटियाँ न होतीं तो समाज आगे नहीं बढ़ पाता। मानवता का वेद दम तोड़ देता।

(घ) कवि ने कहा है कि वे रीति-रिवाज बेकार हैं, जिनमें सिर्फ पुत्रों की सलामती के लिए व्रत-उपवास रखे जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(ख) कवि ने पुत्री-पर्व रचने के लिए कहा है, जिससे समाज उन्नत हो तथा बेटियों को भी अपने पर गर्व हो।

(घ) हमारी दृष्टि में 'अगर न होतीं बेटियां' शीर्षक एकदम सार्थक है, क्योंकि कवि ने इस कविता में एकदम सही कहा है कि यदि इस धरती पर बेटियाँ नहीं होतीं तो संसार का चक्र ही रुक जाता। बेटियाँ एक नहीं, बल्कि दो-दो कुलों का नाम आगे बढ़ाती हैं। अतः बेटियों को सम्मान एवं अधिकार दें।

पठित गद्यांश

(क) बेटियाँ माता बनकर जग को ज्ञान देती हैं।

(ख) शिक्षित माता की संतान भी शिक्षित होती है।

(ग) कवि ने संविधान में बदलाव के लिए इसलिए कहा है, जिससे बेटियों को पूरे अधिकार मिलें और उनके साथ बुरा व्यवहार न हो।

(घ) अशिक्षित तथा अज्ञान।